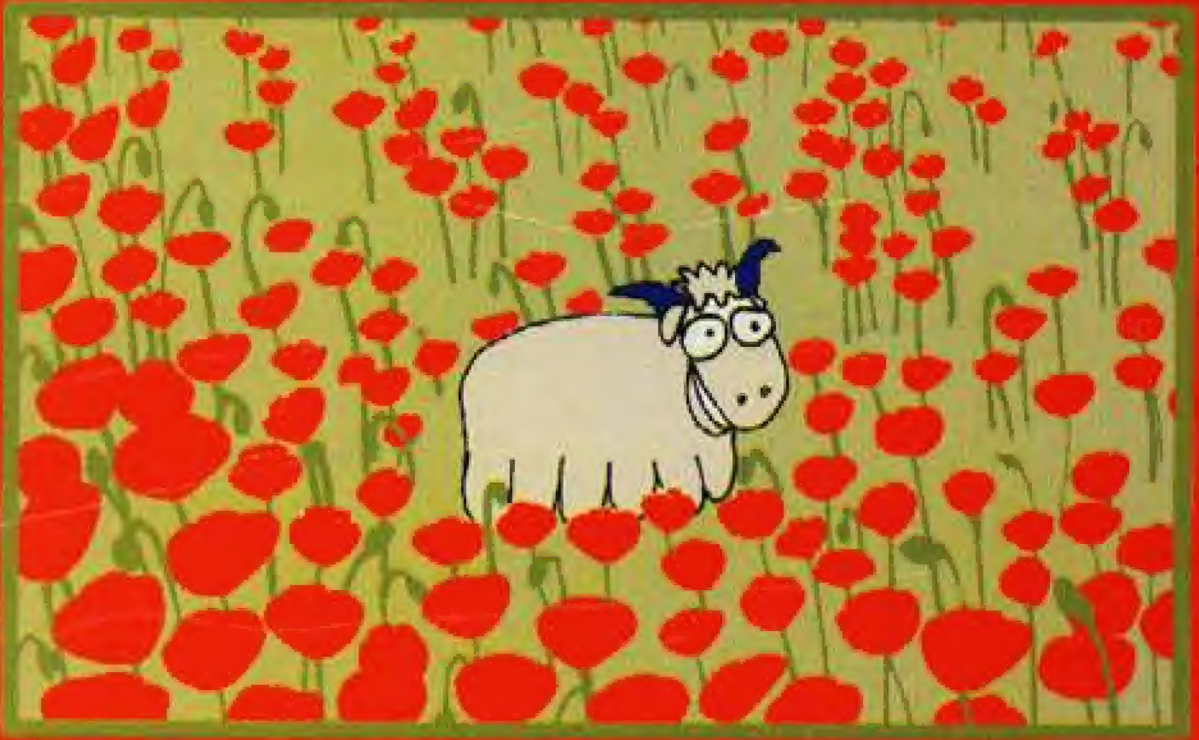

अब्बू खाँ की बकरी

कथा ज़ाकिर हुसैन

चित्र पूजा पोट्टनकुलम

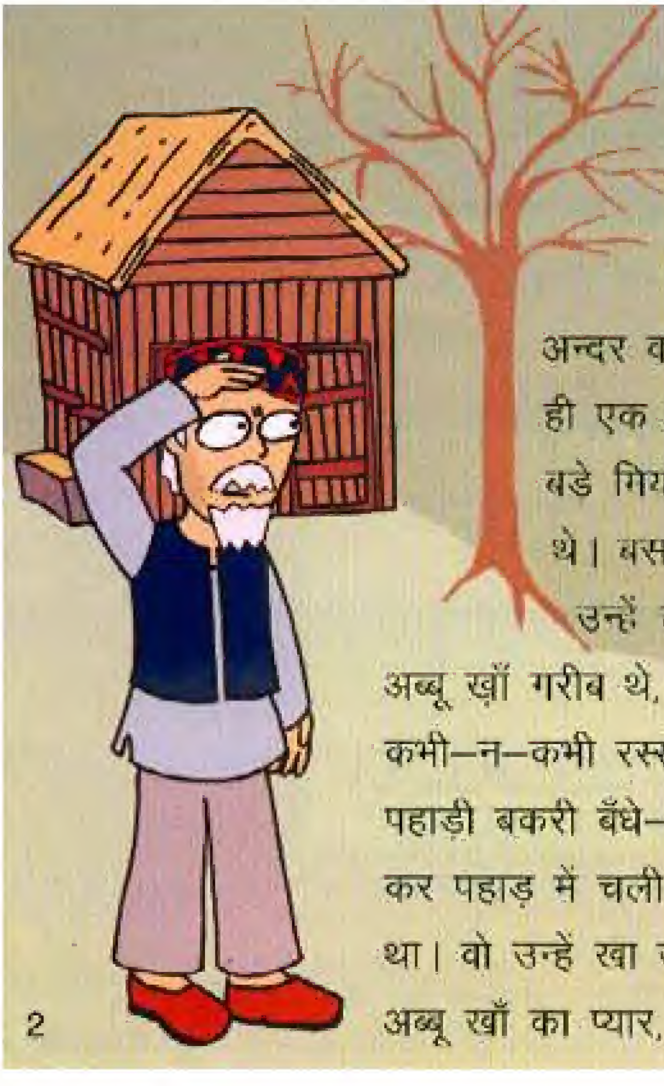

हिमालय पहाड़ का नाम तुमने सुना ही होगा। इससे बड़ा पहाड़ दुनिया में कोई नहीं है। यह हज़ारों मील तक फैला हुआ है। इस पहाड़ के अन्दर वादियों में बहुत सी बस्तियाँ हैं। ऐसी ही एक बस्ती अल्मोड़ा है। अल्मोड़ा में एक बडे मियाँ रहते थे अब्बू ख़ाँ। अकेले आदमी थे। बस एक दो बकरियाँ रखते। दिन भर उन्हें चराते फिरते।

अब्बू ख़ाँ गरीब थे, बड़े बदनसीब। उनकी सारी बकरियाँ कभी–न–कभी रस्सी तुड़ा कर रात को भाग जाती थीं। पहाड़ी बकरी बँधे–बँधे घबरा जाती है। ये बकरियाँ भाग कर पहाड़ में चली जाती थीं। वहाँ एक भेड़िया रहता था। वो उन्हें खा जाता था। मगर अजीब बात है, न अब्बू ख़ाँ का प्यार, न शाम के दाने का लालच उन

बकरियों को भागने से रोक पाता था, न भेड़िए का डर। शायद यह बात हो कि पहाड़ी जानवरों के मिज़ाज में आज़ादी से बहुत मुहब्बत होती है। यह अपनी आज़ादी किसी दामों पे देने को राज़ी नहीं होते। जब अब्बू ख़ाँ की बहुत सी बकरियाँ यूँ भाग गई तो बेचारे बहुत उदास हुए और कहने लगे, "अब बकरी न पालूँगा। ज़िन्दगी के थोड़े दिन और हैं, बिना बकरियों के ही कट जायेंगे।" मगर तनहाई बुरी चीज़ है। जब अब्बू ख़ाँ से बेबकरी न रहा गया, वह कहीं से एक बकरी मोल ले आए। अब्बू ख़ाँ ने सोचा कि कम-उम्र बकरी लूँगा तो शायद हिल जाए और उसे जब पहले ही से अच्छे-अच्छे दाने-चारे की आदत पड़ जाएगी तो फिर यह पहाड़ का रुख़ न करेगी।

यह बकरी थी बहुत ख़ूबसूरत। रंग उसका बिल्कुल सफ़ेद था। बाल लम्बे-लम्बे थे। छोटे-छोटे नुकीले सींग, ऐसे मालूम होते थे कि किसी ने बढ़िया लकड़ी में ख़ूब मेहनत से तराश कर बनाए हों। बड़ी सुन्दर आँखें। प्यार से अब्बू ख़ाँ का हाथ चाटती थी। दूध चाहे तो कोई बच्चा दुह ले। अब्बू ख़ाँ तो उस पर लट्टू हो गए थे। उसका नाम चाँदनी रखा और दिन भर उससे बातें करते रहते थे।

अब्बू ख़ाँ ने यह सोच कर कि शायद बकरियाँ मेरे घर के तंग आँगन में घबरा जाती हैं, अपनी इस बकरी चाँदनी के लिए नया इन्तज़ाम किया था। घर के बाहर उनका एक छोटा सा खेत था। उसके चारों तरफ़ उन्होंने काँटे की बाड़ बनाई। इसके बीच में चाँदनी को बाँधते थे। और रस्सी ख़ूब लम्बी रखी थी ताकि मजे से इधर-उधर घूम सके।

इस तरह चाँदनी को अब्बू ख़ाँ के यहाँ ख़ासा ज़माना गुजर गया और अब्बू ख़ाँ को यकीन हो गया कि आखिर को एक बकरी तो हिल गई।
अब ये न भागेगी।

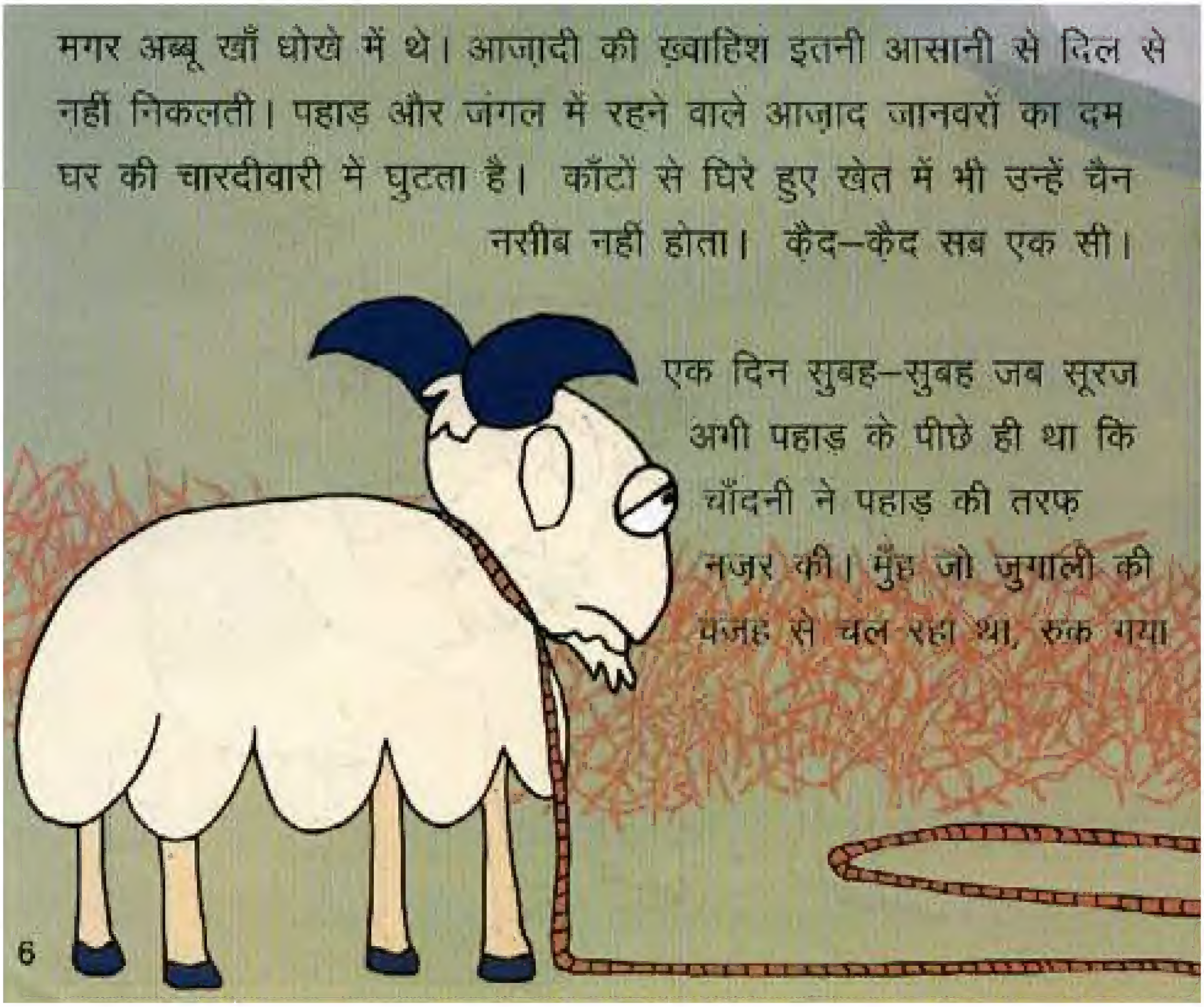

मगर अब्बू ख़ाँ धोखे में थे। आज़ादी की ख़्वाहिश इतनी आसानी से दिल से नहीं निकलती। पहाड़ और जंगल में रहने वाले आज़ाद जानवरों का दम घर की चारदीवारी में घुटता है। काँटों से घिरे हुए खेत में भी उन्हें चैन नसीब नहीं होता। क़ैद–क़ैद सब एक सी।

एक दिन सुबह–सुबह जब सूरज अभी पहाड़ के पीछे ही था कि चाँदनी ने पहाड़ की तरफ़ नज़र की। मुँह जो जुगाली की वजह से चल रहा था, रुक गया।

और चाँदनी ने दिल में कहा, "वो पहाड़ की चोटियाँ कितनी हसीन हैं। वहाँ की हवा और यहाँ की हवा का क्या मुकाबला। गर्दन में आठ पहर ये कम्बख़्त रस्सी।"

बस, इस ख्याल का आना था और चाँदनी अब वह पहली वाली चाँदनी न थी। न उसे हरी–हरी घास अच्छी लगती थी न पानी मज़ा देता था, न अब्बू खाँ की लम्बी दास्तानें उसे भाती थीं। दिन पर दिन दुबली होने लगी। दूध घटने लगा। हर वक्त मुँह पहाड़ की तरफ रहता और रस्सी को खींचती और अजीब दर्द भरी आवाज़ में "में, में," चिल्लाती।

एक दिन सुबह जब अब्बू खाँ ने दूध दुह लिया तो चाँदनी ने उनकी तरफ मुँह फेरा और बकरियों वाली अपनी ज़ुबान में कहा, "अब्बू खाँ मियाँ, मैं अब तुम्हारे पास रहूँगी तो मुझे बड़ी बीमारी हो जाएगी। मुझे तो तुम पहाड़ पर चले जाने दो।" अब्बू खाँ भी बकरियों की बोली समझने लगे थे। चिल्ला कर बोले, "या अल्लाह, ये भी जाने को कहती है, ये भी !"

अब्बू खाँ वहीं घास पर बकरी के पास बैठ गए और निहायत ग़मगीन आवाज़ में पूछा, "क्यूँ, बेटी चाँदनी, तू भी मुझे छोड़ना चाहती है।" चाँदनी ने जवाब दिया, "हाँ, अब्बू खाँ मियाँ। चाहती तो हूँ।" "अरे तो क्या तुझे चारा नहीं मिलता, या दाना पसन्द नहीं।" "नहीं–नहीं मियाँ, मुझे दाने की कोई तकलीफ़ नहीं" चाँदनी ने जवाब दिया। "तो फिर क्या रस्सी छोटी है? मैं और लम्बी कर दूंगा।" चाँदनी ने कहा, "इससे क्या फ़ायदा!" "तो आखिर क्या बात है? तू चाहती क्या है?" चाँदनी बोली, "कुछ नहीं, बस मुझे तो पहाड़ पर जाने दो।" अब्बू खाँ ने कहा, "अरी कम नसीब, तुझे ये खबर भी है कि वहाँ भेड़िया रहता है !

वह जब आएगा तो क्या करेगी?" चाँदनी ने जवाब दिया, "अल्लाह ने दो सींग दिए हैं उनसे उसे मारूंगी।"

"हाँ–हाँ ज़रूर", अब्बू खाँ बोले, "भेड़िये पर तेरे सींगों ही का तो असर होगा !" यह कहकर अब्बू खाँ ने चाँदनी को भेड़िये से बचाने के लिए, उसको कोने की कोठरी में बन्द कर दिया और ऊपर से जंजीर चढ़ा दी। मगर कोठरी की खिड़की को बन्द करना भूल गए। इधर उन्होंने कुंडी चढाई उधर चाँदनी उचक कर खिड़की में से बाहर।

चाँदनी जब पहाड़ पर पहुँची तो उसकी खुशी का क्या पूछना था। उसे लगा जैसे पेड़ खड़े हुए उसे मुबारकबाद दे रहे हैं कि फिर हममें आ मिली। ऊँची घास गले मिल रही थी। फूल मारे खुशी के खिल–खिलाकर हँस रहे थे। मालूम होता था कि सारा पहाड़ अपनी बिछड़ी हुई बच्ची के वापस आने पर फूला नहीं समा रहा था। चाँदनी दिन भर उछली कूदी और दोपहर ढलने पर उसे पहाड़ी बकरियों का एक गल्ला दिखाई दिया। गल्ले की बकरियों ने

उसे ख़ुशी–ख़ुशी अपने पास बुलाया। कुछ जवान बकरों ने तो चाँदनी की बडी ख़ातिर तवाज़ो की। बल्कि इनमें से एक बकरा था जो चाँदनी को भी अच्छा लगा – यह दोनों बहुत देर तक इधर–उधर घूमे। इनमें न जाने क्या–क्या बातें हुईं। एक चश्मा पानी का बह रहा था। उसने सुनी होंगी। शायद वह बता दे। और फिर शायद नहीं। आख़िर एक की बात दूसरे से कहना अच्छा तो नहीं।

ख़ैर बकरियों का गल्ला चला गया। तो जवान बकरा भी। चाँदनी को अभी आज़ादी की इतनी आरज़ू थी कि उसने गल्ले के साथ हो जाना अभी गंवारा न समझा और एक तरफ़ को चल दी।

शाम का वक़्त हुआ। ठंडी हवा चलने लगी। नीचे अब्बू ख़ाँ का घर और काँटों वाला घेरा दोनों कोहरे में छुप गए। चाँदनी चुप–चाप खड़ी हो गई। एक तरफ़ से अब्बू ख़ाँ की आवाज़ आई – "लौट आ, लौट आ।" और दूसरी तरफ़ दुश्मनेजान भेड़िये की। चाँदनी के जी में कुछ तो आया कि लौट चले लेकिन फिर उसे

खूँटा याद आया, रस्सी याद आई, काँटों का घेरा याद आया और उसने सोचा कि उस ज़िंदगी से तो पहाड़ की मौत अच्छी। पीछे से पत्तों की खरखराहट सुनाई दी। चाँदनी ने मुड़ कर देखा तो दो कान दिखाई दिए, सीधे खड़े हुए और दो आँखें जो अंधेरे में चमक रही थीं। भेड़िया पहुँच गया था।

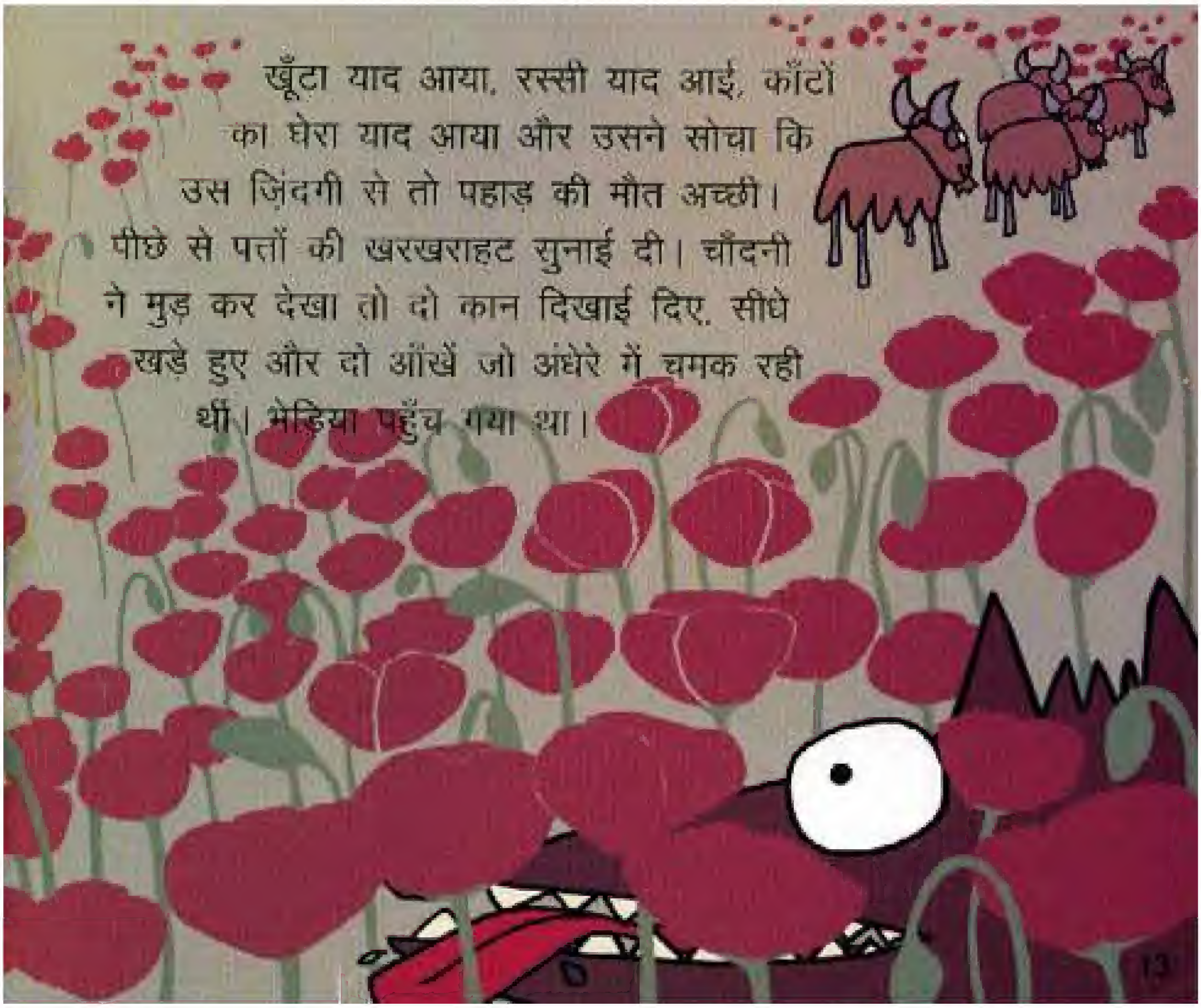

चाँदनी ने जो उसकी तरफ़ रुख़ किया तो वो मुस्कराया और बोला, "ओ हो, अब्बू ख़ाँ की बकरी है। ख़ूब खिला–पिलाकर मोटा किया है।" ये कह कर उसने अपनी लाल–लाल ज़ुबान अपने नीले–नीले होठों पर फेरी। चाँदनी ने सोचा, ख़ामख़ाँ रात भर क्यूँ लड़ूँ, अभी क्यों न अपने आप को शहीद कर दूँ। लेकिन फिर ख्याल आया कि नहीं। अपना सर झुकाया, सींग आगे को किये और पैंतरा बदल कर भेड़िये के मुकाबिल आई कि बहादुरों का यही शेवा है। वह खूब जानती थी कि बकरियाँ भेड़िये को नहीं मार सकतीं। वह तो सिर्फ़ ये चाहती थी कि अपनी बिसात के मुताबिक मुकाबला करे। जीत–हार पर अपना काबू नहीं, वह अल्लाह के हाथ है।

चाँदनी ने सींग सम्भाले और वो–वो हमले किए कि भेड़िये का जी जानता होगा। सितारे एक–एक करके गायब हो गए। चाँदनी ने अपना ज़ोर दुगना कर दिया।

सुबह का वक़्त नज़दीक आया। एक मुर्ग़े ने कहीं से बाँग दी। नीचे बस्ती में से अज़ान की आवाज़ आई। मुअज़्ज़िन आख़िरी दफ़ा, "अल्लाहोअकबर" कह रहा था कि चाँदनी बेदम ज़मीन पर गिर पड़ी। इसके सफ़ेद बालों का लिबास ख़ून से बिल्कुल सुर्ख़ था।

ऊपर दरख़्त पर चिड़ियाँ बैठी देख रही थीं। उनमें बहस हो रही थी कि जीत किसकी हुई। सब कहती हैं कि भेड़िया जीता। एक बूढ़ी सी चिड़िया है, वह मानती है कि चाँदनी जीती।